बिल्ली के गले में घंटी

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

ISBN : 978-81-906764-9-6

बिल्ली के गले में घंटी–(कहानी और कविता)

लेखक :
डॉ. मधु पंत

प्रकाशक :
स्पर्शमणि
104 पॉकेट–ए, माउन्ट कैलाश,
ईस्ट ऑफ कैलाश,
नई दिल्ली – 110065
मो. नं. 9958077550

संस्करण :
सन् 2012

चित्रांकन
मास्टर मनीष कुमार

रूपांकन
श्रीमती सरस्वती

मूल्य : ₹135/–

बिल्ली के गले में घंटी

प्रेरणा स्रोत – श्राव्या को...

बच्चों से.....

नन्हे साथियो!

तुमने वह कहावत सुनी है ना "जहाँ चाह वहाँ राह"? इसका मतलब सीधा और साफ है। यदि हम अपने मन में ठान लें तो असंभव को भी संभव बना सकते हैं। जरूरत है तो थोड़ी तर्क शक्ति की, बुद्धि के सही प्रयोग की और वैज्ञानिक सोच की। यही कारण है कि आज के बच्चे अधिक तर्क संगत ढंग से सोचते हैं, बुद्धि का उचित प्रयोग करते हैं और सफलता भी पाते हैं। आज के समय में अक्ल का सही प्रयोग सबसे बड़ी उपलब्धि है।

यह बात आज के चूहे को भी समझ आ गई। तभी तो जो चूहे बिल्ली के गले में घंटी बाँधने की कल्पना भर कर के निराश हो गए थे, उन्हीं की नई पीढ़ी ने अपनी बुद्धि के चमत्कार से, आख़िर बिल्ली के गले में घंटी बाँध ही डाली। चूहों ने यह तिकड़म कैसे भिड़ाई, जानने के लिए पढ़नी पढेगी यह रोचक और अनोखी कहानी "बिल्ली के गले में घंटी"। एक और ख़ास बात है – इस कहानी को कविता के रूप में भी प्रस्तुत किया गया है। "घंटी कैसे बँधी?" – यही है कहानी का पद्य रूप। वही कहानी गद्य और पद्य दोनों में प्रस्तुत है– यानी सोने में सुहागा–

पुस्तक का चित्रांकन तुम्हारे जैसे एक साथी मनीष ने किया है जिसकी सोच और कल्पना निराली है। तो प्रस्तुत है तुम्हारे लिए यह नई और ख़ास पुस्तक "बिल्ली के गले में घंटी"।

– मधु पंत

पुस्तक के संबंध में...

प्रस्तुत कहानी 'संचित' श्रृंखला के अंतर्गत लिखी गई है। इस श्रृंखला में 'सं' का प्रयोग संकल्पना, 'चि' का प्रयोग चिन्तन तथा 'त' का प्रयोग तर्क के लिए किया गया है। कहानी को गद्य व पद्य दोनों रूपों में प्रस्तुत कर, पाठकों को कविता व कथा दोनों के द्वारा आनन्द प्रदान करने की चेष्टा की गई है। 'संचित' श्रृंखला में संचित और अभिनव बाल–साहित्य को नया और रोचक मोड़ दे कर बच्चों की वैज्ञानिक संकल्पना और तार्किक शक्ति को निखारने का प्रयास किया गया है। यदि बच्चे छोटी उम्र से ही अपनी सोच को सकारात्मक और प्रवृत्ति को वैज्ञानिक बना लें तो उनका सर्वांगीण विकास सर्वथा संभव है।

हास्य, व्यंग्य और रोचकता से भरपूर यह कहानी पाठकों को पूरी तरह से बाँध सकने में समर्थ है, जिससे अंततः बच्चों की खोजी और जिज्ञासु प्रवृत्ति की संतुष्टि तो होगी ही साथ ही उनमें, सही समय पर बुद्धि का प्रयोग करने तथा विश्लेषण करने की क्षमता का विकास भी होगा।

बिल्ली के गले में घंटी

तुमने वह कहानी जरूर सुनी होगी जिसमें एक बिल्ली से परेशान चूहे उस बिल्ली के गले में घंटी बाँधने का विचार करते हैं ताकि बिल्ली के आने के पहले ही उन्हें खतरे की घंटी सुनाई पड़ जाए। किंतु बिल्ली के गले में घंटी कौन बाँधेगा, इस बात का किसी के पास कोई जवाब नहीं था..... और इसलिए बिल्ली के गले में घंटी बँध ही नहीं पाई।

इसके बाद बहुत समय बीत गया..... बिल्ली और चूहे की लड़ाई चालू रही, तब भी थी और अब भी है। लेकिन इस बीच में एक बड़ी दिलचस्प घटना घटी। उस पहली घटना के कई–कई वर्षों के बाद की बात है.....

चूहों की नगरी में, वैसी ही खतरनाक, एक काली बिल्ली ने चूहों की नाक में दम कर दिया था। क्या छोटू क्या मोटू, क्या लम्बू क्या नाटू, हर तरह के चूहों पर उस खतरनाक बिल्ली का ख़ौफ छा गया। सब परेशान हो गए और इतने परेशान हो गए कि मुखिया चूहे ने सभी चूहों की एक सभा बुलाई। सभा में सभी तरह के चूहे आए, काले चूहे, गोरे चूहे, मोटे चूहे, छोटे चूहे, लम्बे चूहे, पतले चूहे, भारी चूहे, हल्के चूहे, हँसमुख चूहे, रोन्दू चूहे, कठखन्ने चूहे, मरखन्ने चूहे, मरियल चूहे, अड़ियल चूहे, चुस्त चूहे, सुस्त चूहे, खुश–मिजाज़ चूहे, तुनक–मिजाज़ चूहे, हाज़िर–जवाब चूहे, लाजबाव चूहे, बुदधू चूहे, अकलमंद चूहे, नटखट चूहे और लटपट चूहे।

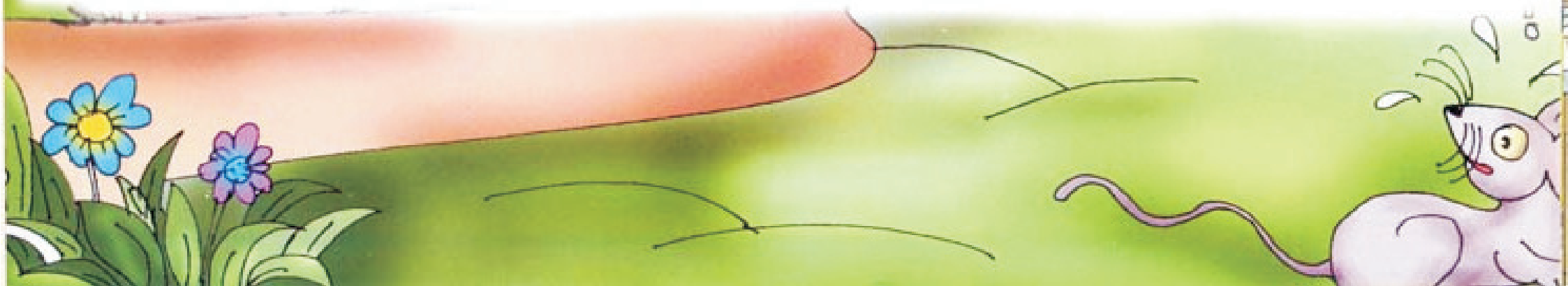

मुखिया चूहे ने भरी सभा को संबोधित करते हुए कहा, "मित्रो! आप सभी जानते हैं कि हम उस खतरनाक काली बिल्ली से कितने परेशान हैं। कोई घर ऐसा नहीं है जहाँ से उस बिल्ली ने कोई शिकार दबोचा न हो। न मालूम कहाँ छिपी रहती है और अचानक ही दबे पाँव आकर हमारे साथियों को धर दबोचती हैं।"

"मेरा बस चले तो मैं उसे गोली से उड़ा दूँ," लड़ाकू चूहे ने कहा।

"गोली से तभी तो उड़ाओगे जब उसके सामने खड़े हो पाओगे," तुनकमिजाज़ चूहे ने टोका।

"मुझे तो उस कटखन्नी और मरखन्नी बिल्ली से बड़ा डर लगता है," रोंदू चूहे ने रोनी–सी आवाज़ में कहा।

"हाँ... हाँ... डर तो हम सभी को लगता है।" सभी चूहों ने रोंदू चूहे की हाँ में हाँ मिलाते हुए अपने–अपने सुर में कहा।.... और फिर सभी चूहे सोच में पड़ गए कि क्या करें? कैसे उस आफ़त से छुटकारा पाएँ?

तभी हाजिर जवाब चूहा उछला और बोला, "हम उस खतरनाक बिल्ली के गले में घंटी क्यों न बाँध दें? उसके आने से पहले ही हमें खतरे की घंटी सुनाई पड़ जाएगी और हम अपने–अपने बिलों में छुप जाएँगे।"

हँसमुख चूहा हँस कर बोला, "और वह घंटी तुम बाँधोगे क्या?"

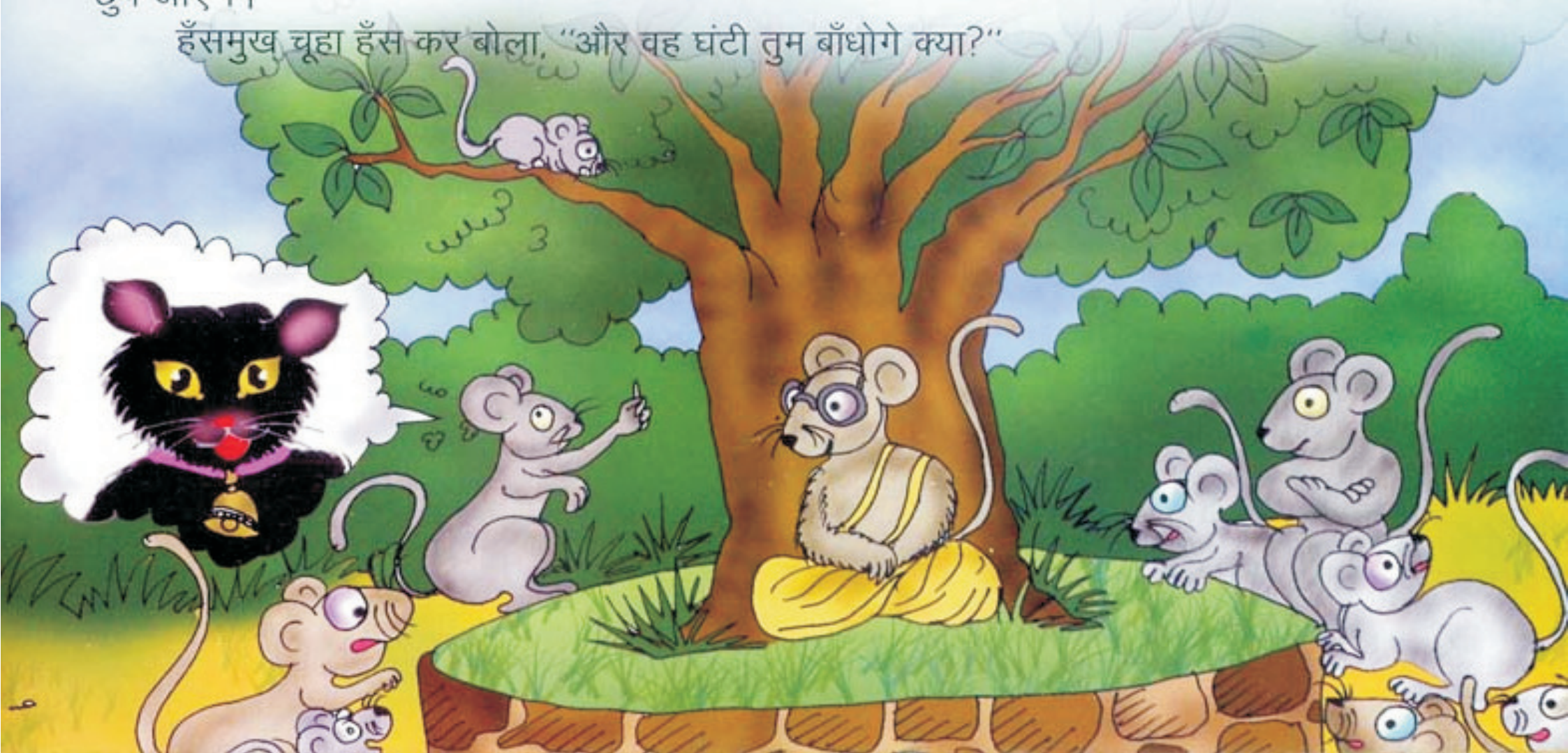

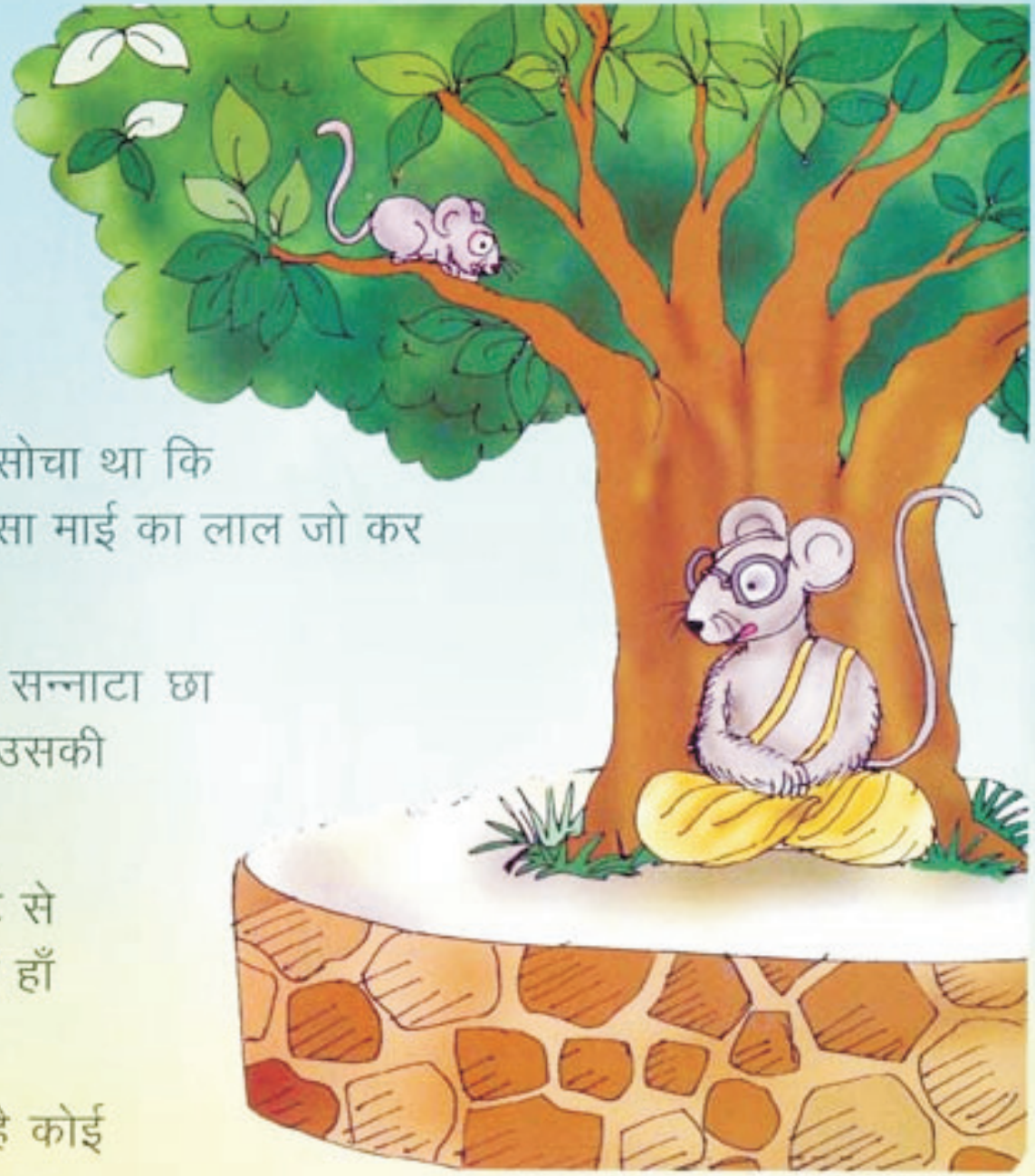

मुखिया चूहे ने बात काटते हुए कहा, "फिर वही पुरानी ढपली और पुराना राग? वही बिल्ली चूहे की भागम–भाग! तुमने सबने सुना होगा... हमारे दादा–दादी, नाना–नानी से पहले भी हमारे जैसे चूहों ने सोचा था कि बिल्ली के गले में घंटी बाँध दें। पर है कोई ऐसा माई का लाल जो कर सके यह कमाल?"

मुखिया चूहे की बात से भरी सभा में सन्नाटा छा गया। ऐसा सन्नाटा कि एक सुई भी गिरे तो उसकी आवाज़ सुनाई पड़ जाए।

तभी कभी न बोलने वाले, नन्हें से, छोटे से चुप्पे चूहे ने अपनी चुप्पी तोड़ते हुए कहा, "हाँ हाँ मेरे पास है एक उपाय।"

सारे के सारे चूहे चौंक पड़े, "उपाय? है कोई उपाय?" सबने अपने–अपने सुर में सवाल किया।

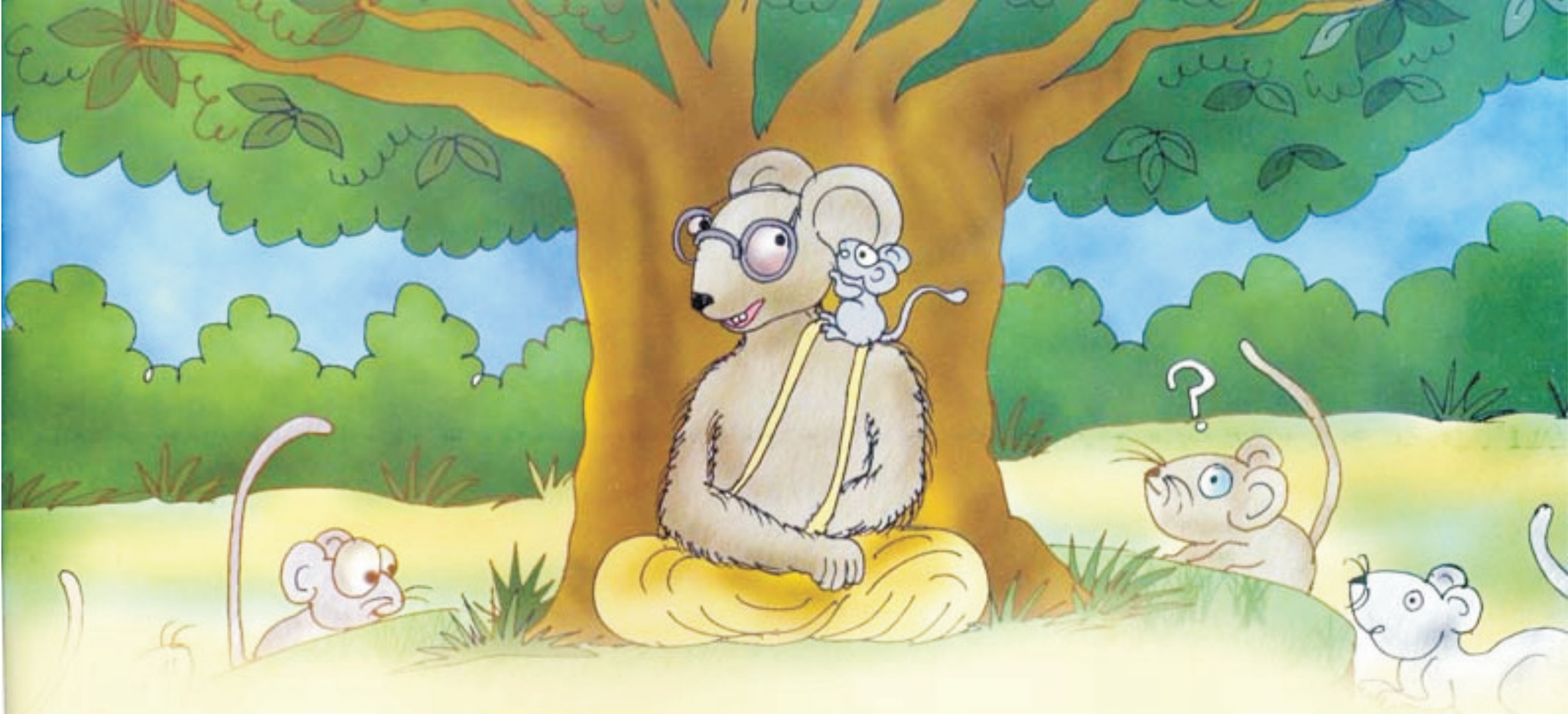

मुखिया चूहा बोला, "अरे अगर उपाय है तो बताओ ना! जल्दी बताओ।"

चुप्पे चूहे ने कहा, "पर यह बात मैं चुपचाप आपको ही बताउँगा, कान में।

यह सुन कर बाकी सारे चूहे हँसने लगे – चुप्पे चूहे की उड़ाने लगे खिल्ली यह कह कर कि "अबकी बार तुझे ही काटेगी काली बिल्ली"।

मुखिया चूहे ने सबको डाँट कर चुप कराते हुए कहा, "सुनने तो दो मुझे उसकी बात! फिर सोचेंगे कि बिल्ली किस पर लगाएगी घात?"

मिश्री
चीनी

चुप्पा चूहा मुखिया चूहे के पास गया और उसके कान में चुपचाप कुछ कहने लगा। मुखिया सुनता और सिर हिलाता, खुश होता, फिर मुस्कुराता। अंत में मुखिया चूहा खुशी से बोला," ठीक है! ठीक है! हम सब यही करेंगे।" फिर सभी चूहों की ओर देखते हुए मुखिया चूहे ने कहा, "मित्रो! आपको एक काम करना होगा। आप सभी अपने–अपने घरों में खूब स्वादिष्ट खीर पकाइये और उसे कल सुबह–सुबह लेकर आइए। कल हम एक दावत करेंगे।"

"खीर और दावत?" सारे के सारे चूहों ने चौंक कर एक–दूसरे की ओर देखा। किसी के भी कुछ समझ में न आया। बातूनी चूहे ने चुप्पे चूहे का खूब मख़ौल उड़ाया। नटखट और लटपट चूहे ने भी मसखरी से बात की। कटखन्ने और मरखन्ने चूहे तो मरने–मारने पर उतारू हो गए।

मुखिया चूहे ने सबको रोकते हुए कहा, "दोस्तो! यदि एकता नहीं रहेगी तो हम अपने मकसद में कभी कामयाब नहीं होंगे। इसलिए जो कहा है वही कीजिए। आपके सारे सवालों का जवाब आपको कल मिलेगा। तो जाइए, कल सब फिर से यहीं पहुचेंगे, अपनी–अपनी स्वादिष्ट खीर के साथ। हाँ एक बात और याद रखिएगा – आज और कल, जब तक आपकी खीर तैयार नहीं होती, कोई चूहा, बाहर न निकले, ताकि वह कल्लो भूख के मारे बेहाल हो जाए।"

अगले दिन हर घर का नज़ारा ही अलग था। सभी चूहों के घर पर पकाई जा रही थी खीर....दूध और चावल की खीर।

काले चूहे, गोरे चूहे, मोटे चूहे, छोटे चूहे, लम्बे चूहे, पतले चूहे नटखट चूहे, लटपट चूहे सभी के घरों में पक रही थी दूध और चावल की स्वादिष्ट खीर।

मुखिया चूहे के कहने के अनुसार सभी चूहे अपनी–अपनी खीर लेकर वहीं पहुँच गए जहाँ चूहों की आम सभा हुई थी। सब चूहों ने देखा, मुखिया चूहा बैठा मुस्कुरा रहा था और चुप्पा चूहा एक लम्बे मुँह वाले घड़ेनुमा मिट्टी के बर्तन के गले में घंटी बाँध रहा था। ''हा...हा.. ये मिट्टी का घड़ा है न कि कटखन्नी बिल्ली। उसके गले में घंटी बाँधने के बदले इस बर्तन में घंटी बाँधने का कमाल तुम्हारे सिवाय और कौन कर सकता है?'' कुछ चूहों ने कहा।

मुखिया चूहे ने सबको शांत करते हुए कहा, "सभी अपनी–अपनी खीर इस बर्तन में डाल दें। बस! इतना ही कीजिये, तुरंत। कोई सवाल – जवाब नहीं।"

सभी चूहों ने हैरान हो कर अपनी–अपनी खीर उस मिट्टी के बर्तन में डाल दी, जिसकी गरदन में घंटी बँधी थी।

"बस अब आप सभी अपने आने बिलों में छुप जाएँ," मुखिया चूहे ने आदेश दिया। सारे चूहे, काले चूहे, गोरे चूहे, मोटे चूहे.... लटपट चूहे अपने–अपने बिलों में छुप गए और साँस रोक कर झाँक–झाँक कर देखने लगे और सोचने लगे कि अब आगे न जाने क्या होगा?

खतरनाक बिल्ली जो हमेशा ही चूहों की ताक में रहती थी, उसे पिछले दिन एक भी चूहा न मिला था। भूखी बिल्ली को अचानक खीर की खुशबू आई। वह भाग कर आई और एक घड़ेनुमा बर्तन में खीर देख कर उसके मुँह में पानी भर आया। उसने जल्दी से खीर चखी। "वाह क्या स्वाद है?" उसने सोचा और झट से लपलप–लपलप खीर चाटने लगी।

भूखी बिल्ली को खीर का स्वाद इतना भाया, इतना भाया कि वह खीर खाती गई, खाती ही गई। ऊपर की खीर ख़तम हुई तो उसने गरदन नीचे डाली और नीचे की खीर भी चाटनी शुरू कर दी। "वाह क्या स्वाद है," उसने फिर मन ही मन सोचा, "ऐसी खीर के सामने चूहों की दरकार भी नहीं।"..... और इस तरह चाटते–चाटते बिल्ली पूरी की पूरी खीर कर गई साफ और जैसे ही उसने अपना मुँह बर्तन से बाहर निकालने की कोशिश की... यह क्या? वह अपना मुँह बर्तन से बाहर निकाल ही नहीं पाई। सँकरे मुँह के बर्तन में उसका सिर फँस चुका था।

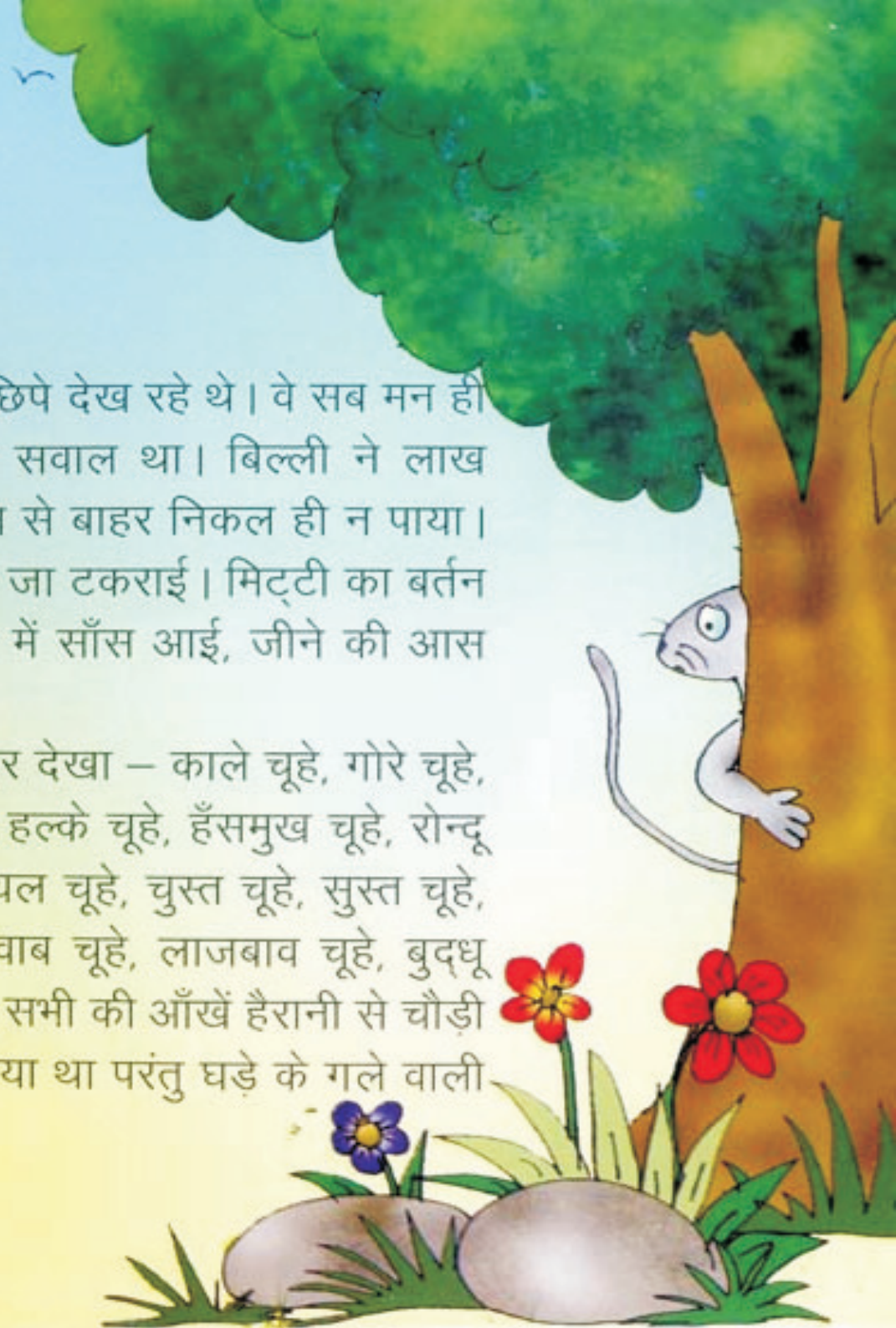

यह नज़ारा सारे चूहे अपनी–अपनी जगहों से छिपे–छिपे देख रहे थे। वे सब मन ही मन खूब हँसे। "अब क्या होगा?" सभी के मन में सवाल था। बिल्ली ने लाख कोशिश की, पर उसका सिर उस सँकरे मुँह के बर्तन से बाहर निकल ही न पाया। बौख़लाई सी बिल्ली इधर–उधर दौड़ी और दीवार से जा टकराई। मिट्टी का बर्तन टूट गया।" "चलो अच्छा हुआ राहत मिली..... साँस में साँस आई, जीने की आस आई," बिल्ली ने खुश होकर सोचा।

पर यह क्या? सारे चूहों ने आँखें फाड़–फाड़ कर देखा – काले चूहे, गोरे चूहे, मोटे चूहे, छोटे चूहे, लम्बे चूहे, पतले चूहे, भारी चूहे, हल्के चूहे, हँसमुख चूहे, रोन्दू चूहे, कठखन्ने चूहे, मरखन्ने चूहे, मरियल चूहे, अड़ियल चूहे, चुस्त चूहे, सुस्त चूहे, खुश–मिजाज़ चूहे, तुनक–मिजाज़ चूहे, हाज़िर–जवाब चूहे, लाजबाव चूहे, बुद्धू चूहे, अकलमंद चूहे, नटखट चूहे और लटपट चूहे ने। सभी की आँखें हैरानी से चौड़ी हो गई" – मिट्टी का बर्तन तो टूट कर अलग हो गया था परंतु घड़े के गले वाली घंटी, बिल्ली के गले में बँध चुकी थी।

घंटी कैसे बँधी?

चूहों की नगरी में उस दिन, मचा हुआ था हाहाकार।
मरखन्नी काली बिल्ली के, डर से काँप रहे परिवार।।
काले चूहे, गोरे चूहे, बातूनी या लम्बे, मोटे।
चुप रहने वाले चुप्पे हों, या चूहे हों खोटे, छोटे।।

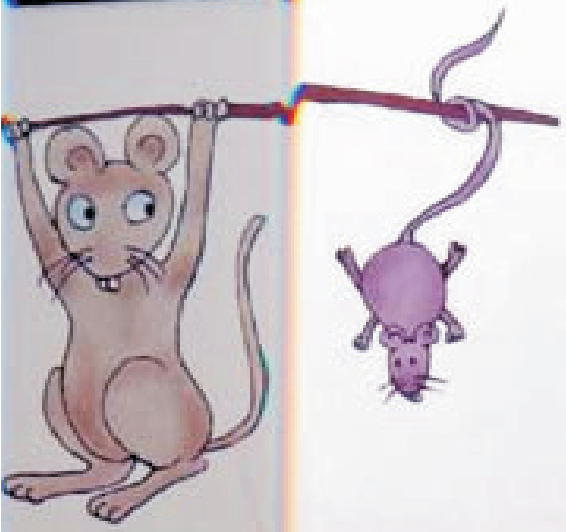

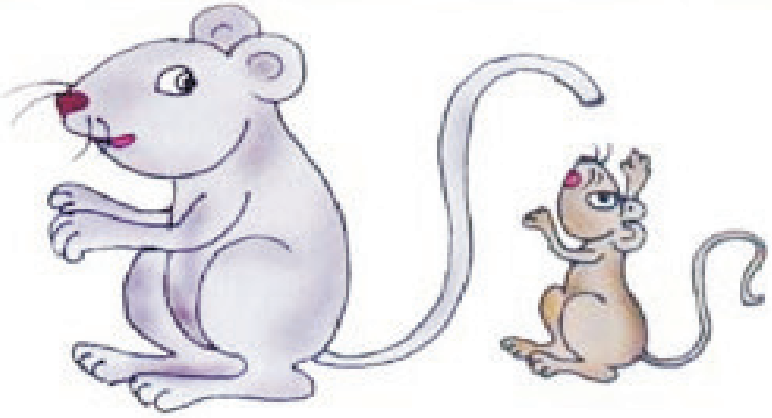

चुस्त, सुस्त, हँसमुख चूहे हों, या अड़ियल, मरियल, मरखन्ने।
नटखट, लटपट, तुनक मिजाज़ी, या फिर हों चूहे कटखन्ने।।
परेशान थे सारे चूहे, नहीं सूझती उनको राह।
धर-दबोच लेगी कब बिल्ली, निकल न पाएगी तब आह।।

मुखिया चूहे ने बुलवाया सब चूहों को अपने पास ।
क्या करना है, आओ सोचें, क्या मिल ढूँढें नया निवास?
भागे-भागे आए चूहे, सभी सोचने लगे उपाय ।
किंतु न सूझा कोई भी हल, कैसी किस्मत पाई हाय ?

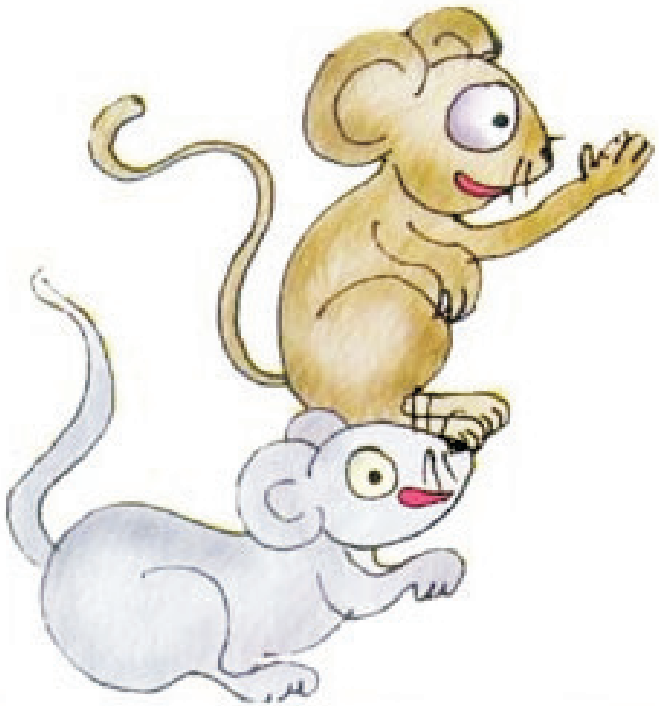

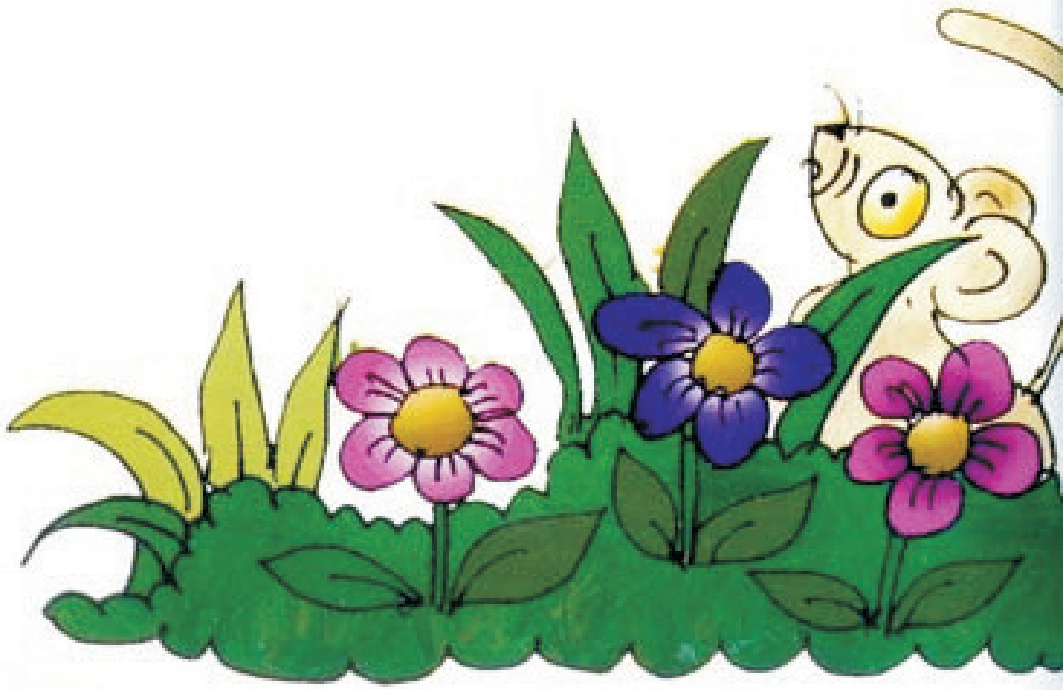

जो हाज़िर जवाब चूहा था, उसने तब यह राह सुझाई ।
अगर गले में उस काली के, घंटी बाँधें मिलकर भाई ।।
खतरे की घंटी को सुन कर, चूहे सारे छिप जाएँगे ।
खतरनाक बिल्ली से बच कर, सभी चैन से रह पाएँगे ।।

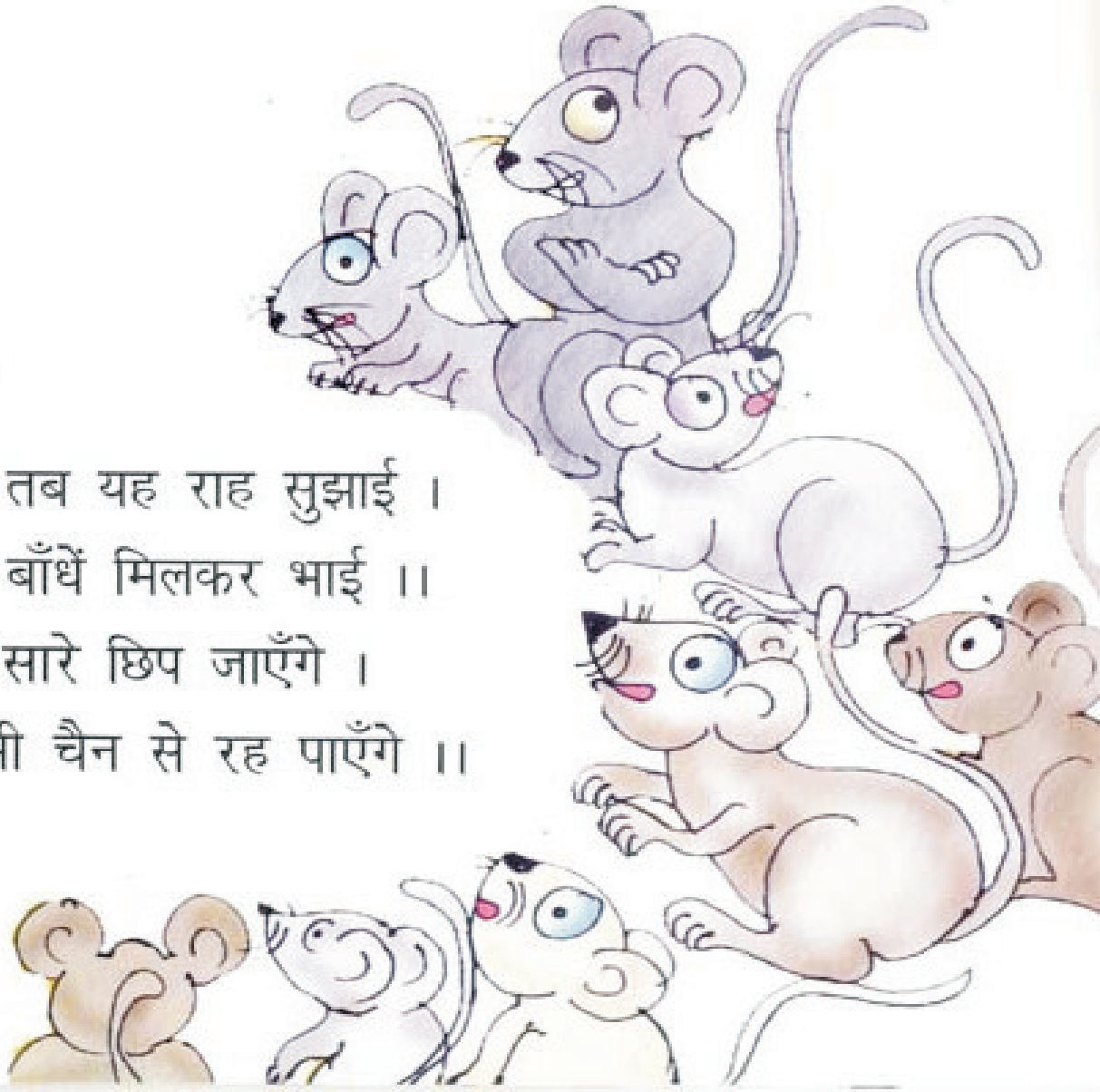

हँसमुख चूहा हँस कर बोला, क्या तुम बाँधोगे वह घंटी ?
ज्यों ही पहुँचोगे बिल्ली तक, हड़प जाएगी तुरत घमंडी ।।
मुखिया भारी मन से बोला, कहाँ छिपा होगा वह लाल ?
जो सचमुच बाँधेगा घंटी, और करेगा हमें निहाल ।।

छोटे चुप्पे चूहे ने तब, कहा सुझा सकता मैं राह ।
मुखिया के कानों में गुप-चुप, दे दी उसने एक सलाह ।।
खुश होकर मुखिया चूहे ने, सब चूहों को यह बतलाया ।
खीर पका कर, कल सब लाना, ऐसा कह कर वह मुसकाया ।।

मन ही मन चूहे चकराए, कहा खीर का क्या है चक्कर ?
मुखिया बोला कहना मानो, करो न तुम आपस में टक्कर ।।
सुबह-सुबह सारे चूहों ने, मीठी-मीठी खीर पकाई ।
चावल दूध पका कर, डाली, चीनी, मिश्री और मलाई ।।

अपनी-अपनी खीर साथ ले, सारे चूहे पहुँच गए जब ।
देखा एक घड़े में घंटी, बँधी हुई थी, चौंक गए सब ।।
बिल्ली नहीं घड़ा है यह तो, भूल गए क्या मेरे भाई ?
हिम्मत अगर नहीं है तुममें, क्यों करते हो जगत हँसाई ?

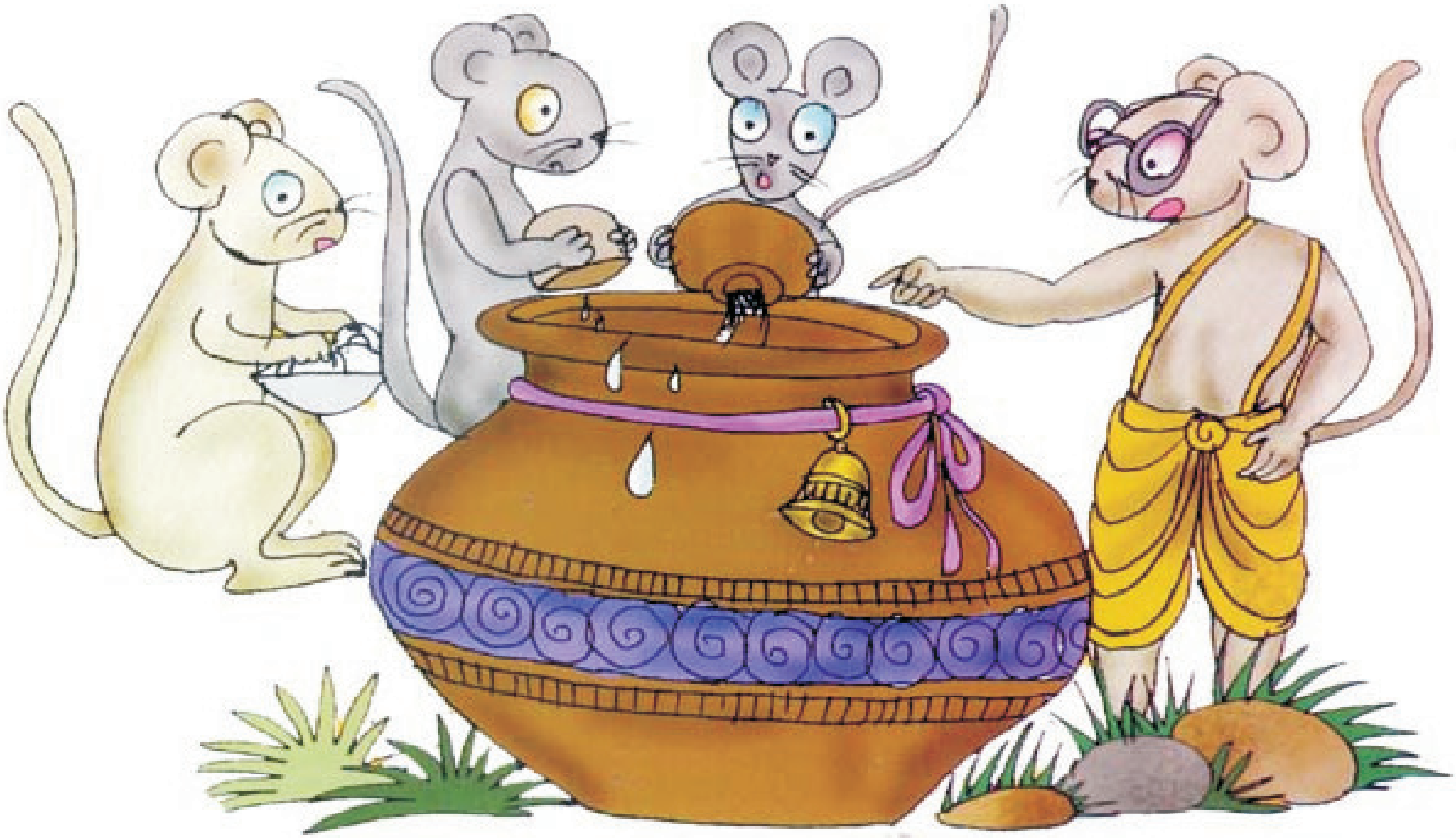

मुखिया बोला, बहस बन्द कर, खीर सभी डालो बरतन में ।
फिर सोचेंगे घंटी कैसे, बाँध सकेंगे हम गरदन में ?
सारे चूहों ने फिर झटपट, खीर उसी बरतन में डाली ।
मुखिया के कहने पर छिप कर, बैठ गए, तब आई काली ।।

खीर देख वह काली बिल्ली, मन ही मन में यूँ हरषाई ।
दावत उसकी आज हुई है, क्या दीपावलि जल्दी आई ?
लप-लप, लप-लप चाट-चाट कर, चटखारे ले-ले कर खाई ।
ऊपर की सब खीर ख़तम कर, बिल्ली नीचे पहुँची भाई ।।

सारी की सारी चट कर के, जब बिल्ली ने लिया डकार ।
पाया सिर तो फँसा हुआ था, निकल न पाता किसी प्रकार ।।
कोशिश सारी विफल हो गई, तब बिल्ली मन में घबराई ।
डर से घबरा कर वह दौड़ी, इधर-उधर भागी टकराई ।।

फूट गया मिट्टी का बरतन, बिखर गए टुकड़े सब ओर ।
किंतु घड़े की घंटी की थी, बिल्ली की गरदन में डोर ।।
सारे चूहों ने यह देखा, मन ही मन थे सब हैरान ।
घंटी बँधी गले में बजती, अब सोएँगे चादर तान ।।

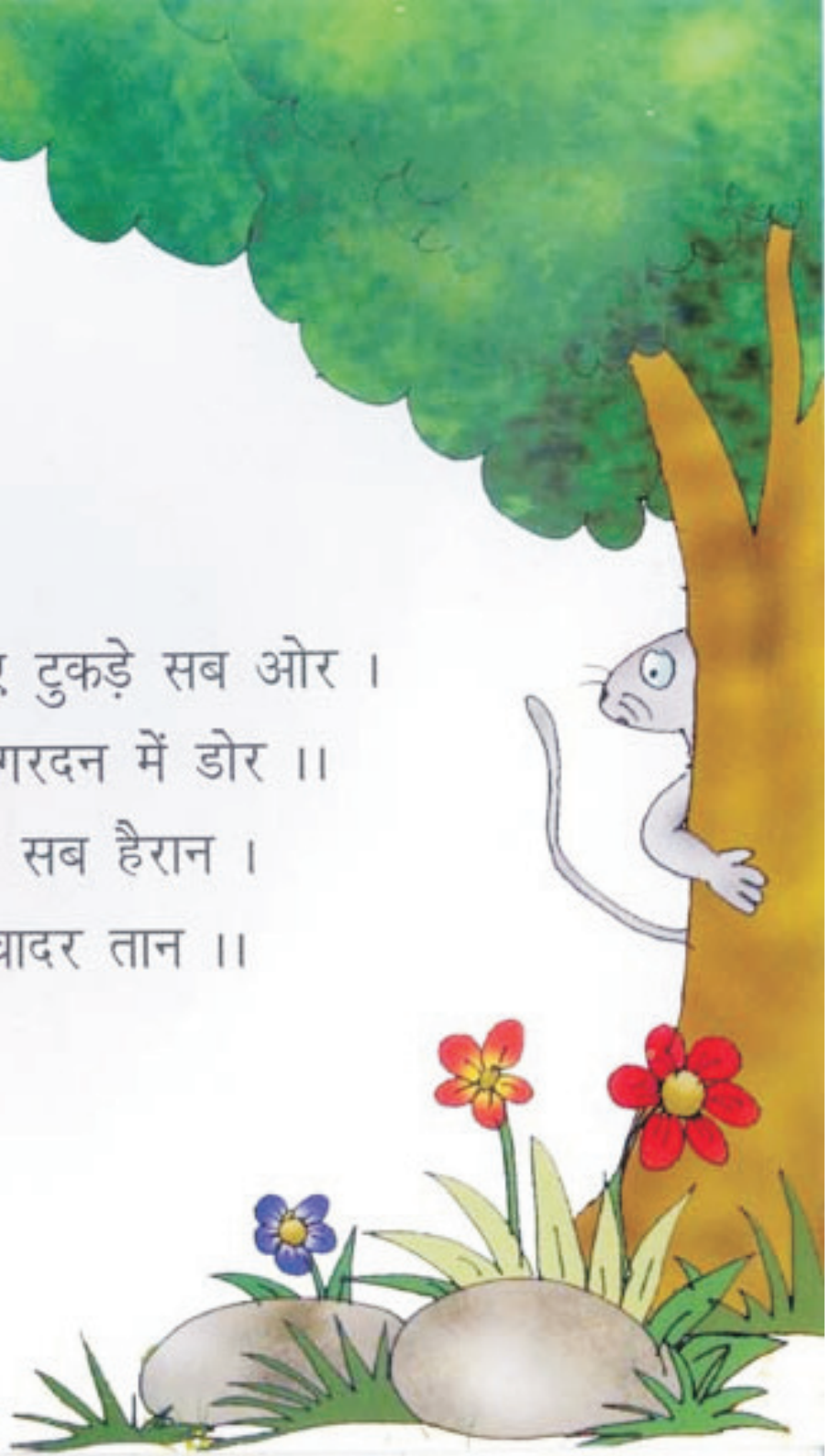

ISBN : 978-81-906764-9-6

मूल्य : ₹135/–

स्पर्शमणि
104 पॉकेट–ए, माउन्ट कैलाश,
ईस्ट ऑफ कैलाश,
नई दिल्ली – 110065
मो. नं. 9958077550